बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक परिवेश, माताओं की शिक्षा तथा शैक्षिक जागरुकता का प्रभाव

रमेश धर द्विवेदी*

प्रस्तुत अध्ययन बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक परिवेश, माताओं की शिक्षा तथा अभिभावक जागरुकता के प्रभाव का अध्ययन करता है। इसमें पारिवारिक परिवेश के अनेक घटकों (नियंत्रण, दंड, पुरस्कार, वंचन, स्वीकृति, पालन-पोषण आदि) के विभिन्न स्तर वाली छात्राओं की उपलब्धि पर इन घटकों के प्रभाव को देखने का प्रयास किया गया है। इसके साथ ही माताओं की शिक्षा (अशिक्षित, शिक्षित तथा उच्च शिक्षित) तथा अभिभावक जागरूकता के विभिन्न स्तरों वाले परिवार की बालिकाओं की उपलब्धि का अध्ययन भी प्रस्तुत शोध में किया गया है। विभिन्न सामाजिक आर्थिक परिवेश की 300 छात्राओं पर किये गये अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि नियंत्रण, संरक्षण, दंड, सामाजिक अलगाव, पुरस्कार, वंचन, अस्वीकृति आदि का बालिकाओं की उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है जबकि सहमति, पोषण एवं वर्जनाहीनता का उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं है। माताओं की शिक्षा तथा अभिभावक जागरूकता भी उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

किसी भी समाज में महिलाओं की स्थिति से उस समाज की भौतिक और आध्यात्मिक स्थिति का पता लगाया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि यदि महिला शिक्षित है, तो वह अपनी संतानों को अच्छी शिक्षा और आचार–विचार दे सकती है। विश्व विद्यालय आयोग ने भी इस बात को कहा है कि –"पढ़ी लिखी महिला के बिना पुरुष भी पढ़ा लिखा नहीं हो सकता है। यदि शिक्षा को महिला और पुरुष में से किसी एक को ही देने की बात की जाय, तो निश्चित ही यह सौभाग्य महिलाओं को दिया जाना चाहिए। ऐसा करने से स्वत: ही शिक्षा का प्रसार दूसरी पीढ़ी तक हो जाता है। महिलाओं को घर बनाने वाली भी कहा जाता है। एक महिला से ही घर का वातावरण

**रीडर, शिक्षा विभाग, उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी (उ.प्र.)*

खुश और समृद्ध बनता है। और ऐसा वातावरण बालकों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने वाला होता है। गांधी जी ने भी कहा है कि 'बच्चों के विकास को तब तक हम सही रूप में नही पा सकते जब तक की माताओं की शिक्षा का समाधान नहीं कर लेते। माताएँ सही रूप में अध्यापिक होती हैं और उन्हें शिक्षित करने के लिए स्कूली शिक्षा देना अनिवार्य है। उनके पास घर को सही रूप में संवारने का विशेष ज्ञान होता है, और वे बच्चों को सही शिक्षा भी दे सकती हैं।' नेहरू जी नें भी इस सत्य को स्वीकार करते हुए कहा है कि 'मैं हमेशा से इस दृढ़ मत का रहा हूँ कि पुरुषों की शिक्षा को नकारा जा सकता है पर महिलाओं की शिक्षा की अनदेखी नहीं की जा सकती है। इसके पीछे स्पष्ट कारण भी है कि यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं, तो पुरुष तो प्रभावित होता ही है, बच्चे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।

छात्रों का बहु आयामी विकास विद्यालय परिवार और समाज से संबंधित विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है। विद्यालय और परिवार का वातावरण तथा अभिभावकों का अपने बच्चों के प्रति दृष्टिकोण किशोरवय बालक/बालिकाओं की उपलब्धि में सार्थक रूप से प्रभावित करता है। पारिवारिक वातावरण परिवार में बालकों/बालिकाओं को उपलब्ध सुविधाओं और अवरोधों से मिलकर बनता है। बालक/बालिकाओं के अच्छे व्यवहार की निन्दा तथा रोक और दंड का मिश्रण होता है। परिवार का वातावरण बालक के व्यक्तित्व विकास में सहायक है। माता-पिता के लालन-पालन के ढ़ंग का किशोरावस्था में, विद्यालयी उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं (स्टीनबर्ग, एलीमन एवं माउन्ट, 1989)। पारिवारिक संबंधियों में भी जब माता-पिता एवं पिता के अलग-2 प्रभावों को देखा गया, तो यह पाया गया कि सिर्फ़ माता द्वारा प्रदान की गयी देखभाल बालकों और बालिकाओं की विद्यालयी और विकासात्मक उपलब्धियों के लिए अत्यन्त प्रभावकारी थी (गिलिगन, 1982; गिलिगन, लायन्स हैमर 1990; हस्टन 1983 (हस्टन और अल्वरेज़, 1990)।

अभिभावकों की शैक्षिक जागरूकता पर हाल के वर्षो में काफ़ी काम हुआ है। समसामयिक परिप्रेक्ष्य में अभिभावक, अध्यापक के साथ एक पूरक शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा है। अभिभावक विद्यार्थियों का अधिगम स्तर सुधारने में अध्यापक के सहयोगी के रूप में एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करते हैं। अभिभावकीय सहयोग चाहे वह किसी रूप में क्यों न हो, अधिगम को बढ़ाने वाला होता है (डिक्सन, 1992)। **अभिभावकीय सहयोग** मुख्यत: दो बातों से मिलकर बना है। एक है सहयोग में *प्रतिबद्धता* का स्तर तथा दूसरा है– *अभिभावकों की सक्रियता और सहयोग का स्तर*। पहले रूप में अभिभावक की सहानुभूति, समझ और विश्वास है तथा दूसरे रूप में प्रत्यक्ष व्यवहार है (वान्डर ग्रिफ़्ट एवं ग्रीन 1992)।

उपरोक्त सभी बातों को देखते हुए हम कह सकते हैं कि महिलाओं की शिक्षा की महती आवश्यकता है, जिससे कि घर का वातावरण सही बना रहे। इससे एक बात और साफ़ होती है कि यदि महिला शिक्षित है, तो वह अपने बच्चों की पढ़ाई में सहयोगी माहौल बनाती है। और पढ़ाई के दौरान बच्चों की दुश्चिंताओं को भी दूर करती है। महिलाएँ बच्चों की देखभाल करते हुए,

उन्हें अच्छे घर का माहौल देती हैं, बच्चों को भावात्मक लगाव देती हैं और पढ़ाई तथा उनकी उपलब्धि में सहायक होती हैं। इन सभी बातों को देखते हुए कहा जा सकता है कि 'घर' बच्चों के समग्र विकास के लिए आवश्यक जगह है और 'माँ' इस जगह की प्रबंधक होती है। माँ ही बच्चे की पहली गुरु होती है और वह उसे भावात्मक लगाव देती है। उस कारण बच्चे माँ से प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से बहुत कुछ सीखते हैं। इस प्रकार से सीखना बच्चे के सर्वांगीण विकास में बहुत सहायक है।

किसी बच्चे के विकास में उसके परिवार का और खासतौर से उसकी माता का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह आश्चर्यजनक है कि आज माँ-बालक के इस संबंध को कम महत्व देकर यह सोचा जाने लगा है कि अगर हमारे पास पैसा है तो हम अपने बालक में अच्छे गुणों का विकास करवा सकते हैं। दुर्भाग्य से हमारे सनातनी परिवारों में भी कुछ इसी तरह की सोच पनपती जा रही है जबकि इस दिशा में संपूर्ण विश्व में हो रहे शोध इससे अलग विचार प्रस्तुत कर रहे हैं।

विगत दो दशकों से अधिक समय से बालकों के लालन-पालन और उनकी उपलब्धि पर विश्वव्यापी शोध हो रहे हैं। चौथे विश्व महिला सम्मेलन, जो बीजिंग (1995) में हुआ था, ने महिलाओं की शिक्षा के संबंध में किए जा रहे भेदभाव को रेखांकित किया है। डेलर्स कमीशन (1996) के प्रतिवेदन में भी महिलाओं और बालिकाओं के लिए ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करने की बात कही गयी है, जो उन्हें पुरुषों के बराबर समझती है तथा कार्यस्थल और समाज में उचित अवसर प्रदान करती है।

उक्त वक्तव्य के आलोक में यह स्पष्ट है कि हमारे भविष्य के लिए नारी शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। पारिवारिक स्वास्थ्य, बच्चों की शिक्षा तथा सामाजिक जीवन, सभी के लिए सफ़लता हमें तभी मिल सकती है जब हम महिलाओं की स्थिति सुधारें तथा उन्हें शिक्षित बनाएँ। प्रस्तुत अध्ययन बालिकाओं की उपलब्धि पर उनके पारिवारिक परिवेश, माताओं की शिक्षा तथा अभिभावक जागरुकता के प्रभाव का विवेचन करता है।

अध्ययन में प्रयुक्त चरों की परिभाषा

1. पारिवारिक परिवेश

पारिवारिक परिवेश यह बताता है कि घर में बच्चे को कितना और किस मात्रा में सामाजिक, संवेदनात्मक और ज्ञानात्मक सहयोग प्रदान किया जाता है। इसमें इन बातों को मापा जाएगा तथा इनकी विशेषताओं को बताया जाएगा। इनके मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं-

- **नियंत्रण**- निरंकुश वातावरण में, जो रोकटोक नियंत्रण बनाने के लिए माता-पिता द्वारा की जाती है।
- **संरक्षण**- माता-पिता द्वारा बच्चे के व्यवहार या क्रिया कलाप में सहयोग करना या समर्थन प्रदान करना।
- **दंड**- इसका आशय है शारीरिक या प्रभावकारी दंड, जो बच्चे के अनचाहे व्यवहार को रोक सके।
- **अनुरूपता**- यह दर्शाता है कि माता-पिता का निर्देश, आज्ञा, जो बच्चे से यह अपेक्षा करता है कि कार्य द्वारा उसे पूरा करे। यहाँ पर माता-पिता के इच्छानुसार कार्य करने का आशय है।

- **सामाजिक विलगाव –** इसका आशय है कि बच्चे को, जो प्यार परिवार में मिलना चाहिए उसका न मिलना तथा परिवार के सदस्यों का बच्चे के प्रति नकारात्मक सोच रखना।
- **पुरस्कार –** इसका आशय है माता-पिता द्वारा बच्चें के मनचाहे व्यवहार को, उनमें उत्पन्न करने के लिए किया जाने वाला व्यवहार।
- **वंचन –** इसका आशय बच्चे के गलत व्यवहार को माता-पिता द्वारा प्यार आदर बच्चे की देखभाल के अधिकार से वंचित किया जाना है।
- **पालन-पोषण –** इससे तात्पर्य है कि माता-पिता बच्चे के साथ किस रूप में भौतिक तथा संवेदनात्मक स्तर से जुड़ाव महसूस करते हैं। इसमें माता-पिता बच्चे के साथ बहुत ज़्यादा प्यार करते हैं।
- **नकारना –** इसका तात्पर्य माता-पिता के ऐसे व्यवहार से है जिसमें बच्चे को मिलने वाला प्यार-दुलार नहीं मिलता है तथा उनके किसी क्रिया कलाप को मान्यता नहीं मिलती है। उनका किसी भी स्तर पर स्वामित्व वाला हिसाब नहीं हो पाता है।
- **अनुमति –** ऐसी देखभाल से तात्पर्य है कि बच्चे को स्वंतत्रता मिलना, जिससे वे अपने कार्यो को ठीक से संपादित कर सकें। वो अपनी इच्छानुसार बिना किसी टोका-टोकी के सभी कार्यो को करने का अधिकार प्राप्त करने का वातावरण मिलना।

2. माता की शिक्षा

इस शोध में माता को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया है।

1. **अनपढ़ –** इस श्रेणी में उन माताओं को रखा गया है जिनको औपचारिक रूप से शिक्षा न मिली हो।
2. **शिक्षित –** इस श्रेणी में उन माताओं को रखा गया है जिन्होंने इन्टरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त की हो।
3. **उच्च शिक्षित –** इस श्रेणी में उन माताओं को रखा गया जिनकी शिक्षा बी. ए. या एम. ए. तक हुई हो या इसके समकक्ष कोई डिग्री हासिल की हो।

3. अभिभावक जागरुकता

अभिभावक जागरुकता बालिका द्वारा महसूस किया गया माता-पिता का वह व्यवहार है, जो अभिभावक अपने बच्चों और उनकी समस्याओं के संदर्भ में प्रदर्शित करते हैं।

4. शैक्षिक उपलब्धि

इस शोध में उपलब्धि का तात्पर्य बालिकाओं द्वारा अपने प्रयास से प्राप्त शैक्षिक परिणाम तथा अनुदेशात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति, ज़रूरी कौशलों का ज्ञान प्राप्त करना तथा किसी विषय विशेष में विशेषज्ञता हासिल करने से है। इस शोध में हमने बालिकाओं के हाई स्कूल परीक्षा के प्राप्तांक तथा हिंदी विषय की उपलब्धि को चुना है।

अध्ययन के उद्देश्य

- पारिवारिक परिवेश के विभिन्न घटकों पर अलग-अलग परिवेश वाली बालिकाओं के संपूर्ण प्राप्तांकों तथा हिंदी विषय के प्राप्तांकों की तुलना करना।
- अभिभावकों की जागरुकता के आधार पर विभिन्न जागरूकता स्तर वाले अभिभावकों

के बालिकाओं के संपूर्ण प्राप्तांक तथा हिंदी विषय के प्राप्तांकों की तुलना करना।

- विभिन्न स्तर की शिक्षा वाली माताओं की बालिकाओं के सम्पूर्ण प्राप्तांक तथा हिंदी विषय के प्राप्तांकों की तुलना करना।

परिकल्पना

H_1: पारिवारिक परिवेश के विभिन्न घटकों (नियंत्रण, संरक्षण, दंड, अनुरूपता, सामाजिक विलगाव, पुरस्कार, वंचन, पालन-पोषण, नकारना तथा अनुमति) के विभिन्न स्तर वाली बालिकाओं के हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक में सार्थक अंतर नहीं है।

H_2: पारिवारिक परिवेश के विभिन्न घटकों (नियंत्रण, संरक्षण, दंड, अनुरूपता, सामाजिक विलगाव, पुरस्कार, वंचन, पालन-पोषण, नकारना तथा अनुमति) के विभिन्न स्तर वाली बालिकाओं के हिंदी विषय की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_3: विभिन्न जागरुकता स्तर वाले अभिभावकों की बालिकाओं के हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_4: विभिन्न जागरुकतास्तर वाले अभिभावकों की बालिकाओं के हिंदी विषय की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_5: माताओं की शिक्षा के आधार पर विभिन्न श्रेणियो में वर्गीकृत बालिकाओं के हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_6: माताओं की शिक्षा के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में वगीकृत बालिकाओं के हिंदी विषय की उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध का सीमांकन

यह अध्ययन पूर्वी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों की उन छात्राओं पर किया गया है जो कक्षा-10 में अध्ययनरत हैं। ऐसा इसलिए किया गया है कि माध्यमिक स्तर शिक्षा का एक महत्वूर्ण स्तर है जिसका आगे के स्तरों एवं जीवन चर्या के साथ काफ़ी सकारात्मक संबंध है। इस स्तर के परिणामों की व्यापक उपादेयता होती है। यह अध्ययन मात्र पूर्वी उत्तर प्रदेश की छात्राओं पर किया गया है। उत्तर प्रदेश का यह हिस्सा प्रदेश के अन्य हिस्सों के मुकाबले सामाजिक आर्थिक परिवेश तथा अन्य सुविधाओं में काफ़ी पिछड़ा है। यह घनी आबादी तथा कम आय वर्ग के लोगों का क्षेत्र है जहां स्कूली सुविधाएँ भी काफ़ी कम हैं।

15-17 वर्ष आयु वर्ग की बालिकाएँ अपने जीवन के एक कठिन दौर से गुज़र रही होती हैं। एक तरफ़ उनका शारीरिक और संवेगात्मक परिवर्तन हो रहा होता है, तो दूसरी तरफ़ उनके समक्ष सामाजिक और शैक्षिक चुनौतियाँ होती हैं। ऐसी परिस्थिति में अगर उन्हें अपने आस-पास अपना सबसे बड़ा हित चिंतक दिखता है, तो वो उनकी माँ होती है। इसीलिए इस अध्ययन में बालिकाओं की उपलब्धि पर उनकी माताओं की शिक्षा तथा उनके द्वारा दी जाने वाली शैक्षिक मदद के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

शोध प्रारूप

किसी शोध के प्रारूप में परिस्थितियों का व्यवस्थापन इस प्रकार से किया जाता है कि

आँकडों का संग्रहण और विश्लेषण शोध के उद्देश्य और प्रक्रियाओं की सहजता के साथ किया जा सके। प्रस्तुत शोध विवरणात्मक शोध की श्रेणी में आता है, जो कार्य–कारण तथा तुलनात्मक सर्वे प्रकृति के शोध की सारी विशेषताओं को समाहित किए हुए है।

(i) समष्टि और न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य हाईस्कूल स्तर पर पढ़ने वाली छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक परिवेश, अभिभावकों की जागरुकता तथा माताओं की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करना था अत: उ.प्र. माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित विद्यालयों की कक्षा 10 में पढ़ने वाली छात्राओं को समष्टि के रूप में रखा गया।

इस अध्ययन के न्यादर्श के रूप में पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर एवं महराजगंज जनपद में पढ़ने वाली 300 छात्राओं का चयन किया गया है। इन दोनों जनपदों का चयन इसलिए किया गया कि इनमें शहरी, ग्रामीण तथा पिछड़े सभी तरह के लोगों का उचित प्रतिनिधित्व उपलब्ध था। इन दोनों जनपदों में से प्रत्येक से चार विद्यालयों का चयन किया गया जिनमें दो विद्यालय शहरी क्षेत्र के तथा दो विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र के थे।

(ii) शोध के चर –

1. स्वतंत्र चर–
   (i) पारिवारिक परिवेश
   (ii) अभिभावक जागरुकता
   (iii) माताओं की शिक्षा
2. आश्रित चर–
   (i) हाईस्कूल परीक्षा में बालिकाओं के प्राप्तांकों का योग
   (ii) हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक
3. मध्यवर्ती चर–
   (i) बुद्धि

(iii) उपकरण –

प्रस्तुत शोध में दो प्रकार के मापन उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

1. शोधकर्ता द्वारा निर्मित उपकरण
   (i) अभिभावक जागरूकता मापनी
   (ii) हिंदी विषय में उपलब्धिा परीक्षण
2. अन्य विद्वानों द्वारा निर्मित उपकरण –
   (i) पारिवारिक परिवेश मापनी - डॉ. करूणा शंकर मिश्र
   (ii) सामान्य मानसिक योग्यता (बुद्धि) परीक्षा - प्रो. एम. सी. जोशी

निष्कर्ष एवं व्याख्या

पारिवारिक परिवेश मापनी के प्रत्येक घटक, अभिभावक जागरुकता एवं माताओं की शिक्षा के आधार पर पूरे समूह को तीन भागों- कम, सामान्य एवं अधिक में विभक्त किया गया। घटकों को तीन भागों में बाँटने के लिए प्रत्येक घटक के मध्यमान, मानक, विचलन और N के आधार पर तैयार किए गये सम वितरण वक्र की सहायता ली गयी। किसी भी घटक पर मध्यमान मानक विचलन से नीचे के प्राप्तांक को कम, मध्यमान मानक विचलन से मध्यमान मानक विचलन के बीच में पड़ने वाले प्राप्तांकों को सामान्य एवं मध्यमान मानक विचलन के उपर वाले प्राप्तांकों को अधिक की श्रेणी में रखा गया। वर्ष 2012 की हाईस्कूल परीक्षा में छात्राओं के प्राप्तांक तथा हिंदी उपलब्धि परीक्षण में उनके निष्पादन को उपलब्धि के मापक के रूप में प्रयोग किया

गया। आँकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों को विभिन्न सारणियों में प्रस्तुत किया गया है।

(i) पारिवारिक परिवेश का उपलब्धि पर प्रभाव

प्रस्तुत शोध का पहला और दूसरा उद्देश्य पारिवारिक परिवेश के प्रत्येक घटक (नियंत्रण, संरक्षण, दंड, सहमति, सामाजिक अलगाव, पुरस्कार, सुविधाओं का वंचन, पोषण, अस्वीकृति तथा वर्जनाहीनता) का छात्रों की हाईस्कूल परीक्षा में कुल उपलब्धि और हिंदी उपलब्धि परीक्षण में उनके निष्पादन पर प्रभाव देखना था। अग्रांकित पंक्तियों में घटक वार परिणामों की विवेचना की गयी है।

(ii) नियंत्रण का उपलब्धि पर प्रभाव

पारिवारिक परिवेश में विभिन्न मात्रा में नियंत्रण का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव प्रदर्शित करने वाले परिणाम तालिका 1 में प्रदर्शित हैं। परिणामों से स्पष्ट है कि नियंत्रण के स्तर का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। नियंत्रण के तीनों समूहों कम, सामान्य एवं अधिक वाली बालिकाओं के कुल उपलब्धि की तुलना में यह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर है कि कम और सामान्य तथा कम और अधिक वर्ग की छात्राओं की कुल उपलब्धि में 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। सामान्य और अधिक समूह के लिए भी कुल उपलब्धि में सार्थक अंतर है परंतु यह अंतर 0.05 सार्थकता स्तर पर है। स्पष्ट है कि जो बालिकाएँ एक निश्चित सीमा से कम नियंत्रण वाले परिवेश में रहती हैं उनका परिणाम ऋणात्मक रूप से प्रभावित होता है। यह परिणाम पाण्डेय (2002) के परिणाम द्वारा भी पुष्ट होता है। यद्यपि इस संबंध में Horlacsu (1994) का परिणाम इससे उल्टा था। उन्होंने पाया था कि नियंत्रण उपलब्धि को ऋणात्मक रूप से प्रभावित करता है।

विभिन्न स्तर के नियंत्रण वाले परिवेश में रहने वाली बालिकाओं की हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांकों की तुलना करने पर यह पाया गया कि कम और अधिक नियंत्रण वाली छात्रओं की उपलब्धि सामान्य नियंत्रण वाली छात्राओं की उपलब्धि से ज़्यादा थी। स्पष्ट है कि सामान्य नियंत्रण में रहने वाली छात्राएँ हिंदी विषय को महत्वपूर्ण न मानते हुए अपना ज़्यादा ध्यान विज्ञान एवं अन्य कठिन विषयों की ओर लगाती हैं।

तालिका 1

स्तर	*हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक*				*हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक*			
	मध्यमान M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'	*मध्यमान* M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'
कम N=44	381.4	57.72	कम-सामान्य	2.54	35.32	6.16	कम-सामान्य	2.77
सामान्य N=212	357.6	55.35	कम-अधिक	3.86	32.28	6.72	कम-अधिक	.318
अधिक N=44	332.12	62.17	सामान्य-अधिक	2.76	38.44	6.72	सामान्य-अधिक	5.57

परिवार में भी यह सामान्य धारणा होती है कि विज्ञान, गणित जैसे कठिन विषयों पर ज़्यादा समय देना चाहिए। इसके विपरीत कम नियंत्रण वाली बालिकाएँ हिंदी विषय को आसान समझकर उस पर ज़्यादा समय देती हैं तथा अधिक नियंत्रण वाली छात्राओं के अभिभावक सारे विषयों हेतु एक निश्चित समय की पढ़ाई पर ज़ोर देते हैं, अतः इन बालिकाओं की हाईस्कूल परीक्षा के अंक और हिंदी उपलब्धि परीक्षण के अंक दोनों ही ज़्यादा हैं।

संरक्षण का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव

पारिवारिक परिवेश में विभिन्न स्तरों के संरक्षण वाली छात्राओं के हाईस्कूल परीक्षा के अंक एवं हिंदी उपलब्धि परीक्षण के अंकों से संबंधित परिणाम तालिका 2 में दिये गए हैं। अध्ययन के फलस्वरूप यह पाया गया कि जो बालिकाएँ पारिवारिक परिवेश में कम नियंत्रण में रहती हैं उनकी हाईस्कूल परीक्षा और हिंदी उपलब्धि परीक्षण दोनों में प्राप्तांक अपने उन साथियों से ज़्यादा होता है, जो सामान्य या अधिक संरक्षण में रहती हैं। यह साबित करता है कि स्वतंत्र व्यवहार को रोकने और बाल्यावस्था जैसी देखभाल छात्राओं की उपलब्धि को बाधित करती है।

इसके विपरीत यदि इस आयु वर्ग (15–17 वर्ष) की बालिकाओं को स्वतंत्र रूप से कार्य करने और अपनी देखभाल करने की छूट दी जाती है तो वे विभिन्न विषयों में काफ़ी अच्छा प्रदर्शन करती हैं। यह उनके हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक और हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांको से भी परिलक्षित हो रहा है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पारिवारिक परिवेश में स्वतंत्रता तथा अपने अनुसार जीने की छूट बालिकाओं को आत्मनिर्भर और विश्वासी बनाती है। यह आत्मविश्वास ही बालिकाओं को विभिन्न विषयों में अच्छा निष्पादन करने के लिए प्रेरित करता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि तानाशाही का वातावरण, जिसमें बच्चों पर माता–पिता द्वारा तरह–तरह की रोक–टोक लगाई जाती है, बच्चों की उपलब्धि में बाधक बनती है।

दंड का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव

दंड का उपलब्धि पर प्रभाव प्रदर्शित करने वाले

तालिका 2

स्तर	*हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक*				*हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक*			
	मध्यमान M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'	*मध्यमान* M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'
कम N=43	315.76	55.46	कम–सामान्य	3.97	35.18	7.16	कम–सामान्य	2.41
सामान्य N=210	355.12	60.03	कम–अधिक	3.77	32.41	6.82	कम–अधिक	3.16
अधिक N=47	364.87	66.92	सामान्य–अधिक	0.98	30.22	7.66	सामान्य–अधिक	1.94

परिणाम तालिका 3 में दिये गये हैं। परिणामों से यह स्पष्ट है कि पारिवारिक परिवेश में सामान्य स्तर पर दंड वाले परिवारों की बालिकाएँ अच्छा निष्पादन करती हैं। इसका अर्थ है कि सामान्य स्तर का शारीरिक या भावनात्मक दंड, जो अवांछित व्यवहारों को रोकने के लिए परिवार में दिया जाता है, छात्राओं के निष्पादन स्तर को बढ़ाता है। इसके विपरीत कम या ज़्यादा स्तर का दंड उपलब्धि को ऋणात्मक रूप से प्रभावित करता है। इसका यह संभावित कारण है कि अभिभावको के स्तर पर पूरी स्वतंत्रता छात्राओं की अध्ययन संबंधी आदतों में ढीलेपन का कारण बन जाती है और छात्राएँ अपने अध्ययन को ठीक से संपादित नहीं करती हैं, जो उनकी कम उपलब्धि का कारण बन जाता है।

इसी प्रकार परिवार में कठोर दंड पाने वाले बच्चे भी अध्ययन से अपनी रुचि कम कर लेते हैं और इनका निष्पादन स्तर भी कम हो जाता है। भारतीय किशोरी बालिकाएँ इतनी परिपक्व नहीं होती हैं कि वे आत्मविकास के संदर्भ में स्वयं निर्णय ले सकें। सामान्य स्तर के दंड वाली छात्राओं की अधिक उपलब्धि संभवत: इसी कारण से है। पाण्डेय (1985, 2002) के परिणाम भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं।

सहमति का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव

पारिवारिक परिवेश में विभिन्न स्तरों की सहमति (conformity) वाली छात्राओं की हाई स्कूल परीक्षा के प्राप्तांक और हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक से संबंधित परिणाम तालिका 4 में प्रदर्शित किया गया है। परिणाम से स्पष्ट है कि सहमति का उपलब्धि पर बहुत ज़्यादा प्रभाव नहीं पड़ता है। हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांकों में कम तथा अधिक सहमति वाली बालिकाओं के प्राप्तांकों में 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया जाता है जबकि कम-सामान्य तथा सामान्य-अधिक वर्ग की तुलना में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। इसी प्रकार हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांकों में भी कम-अधिक सहमति वाले समूह के मध्य 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया है जबकि कम-सामान्य तथा सामान्य-अधिक तुलना समूह के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। स्पष्ट है कि सहमति उपलब्धि को प्रभावित करती

तालिका 3

स्तर	*हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक*				*हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक*			
	मध्यमान M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'	*मध्यमान* M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'
कम N=39	345.18	64.12	कम-सामान्य	2.59	32.38	6.06	कम-सामान्य	2.04
सामान्य N=215	374.27	64.72	कम-अधिक	0.80	34.88	7.21	कम-अधिक	1.36
अधिक N=46	355.27	57.25	सामान्य-अधिक	1.799	30.46	6.84	सामान्य-अधिक	3.81

तालिका 4

स्तर	हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक				हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक			
	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	तुलना समूह	't'	मध्यमान M	मा. विचलन S.D.	तुलना समूह	't'
कम N=44	342.2	61.12	कम-सामान्य	1.43	30.62	7.32	कम-सामान्य	1.88
सामान्य N=208	356.78	61.76	कम-अधिक	2.13	32.59	6.09	कम-अधिक	2.62
अधिक N=48	371.25	68.82	सामान्य-अधिक	1.43	34.16	6.22	सामान्य-अधिक	1.60

दिख रही है परंतु यह अंतर इतना कम है कि विश्वास के साथ यह कह पाना संभव नहीं है कि उपलब्धि का यह अंतर सहमति के कारण ही है या अन्य कारक इस अंतर को प्रभावित कर रहे हैं।

सामाजिक अलगाव का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव

सामाजिक अलगाव का छात्राओं की उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित परिणाम तालिका 5 में प्रदर्शित किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि सामान्य स्तर का सामाजिक अलगाव जिन परिवारों में प्रदर्शित किया जाता है उन छात्राओं की उपलब्धि कम या ज़्यादा सामाजिक अलगाव वाली छात्राओं की उपलब्धि से ज़्यादा होती है। कम-सामान्य समूह के मध्यमानों का अंतर हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक के संदर्भ में 0.05 स्तर पर सार्थक है जबकि हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक कम-सामान्य समूह हेतु 0.01 स्तर पर तथा सामान्य-अधिक समूह के संदर्भ में 0.05 स्तर पर सार्थक है। कम-अधिक समूह की उपलब्धि में हाईस्कूल परीक्षा तथा हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। सामाजिक अलगाव एक तरह से ऋणात्मक पुनर्वलक की तरह से काम करता है, जिसकी कमी और अधिकता दोनों ही उपलब्धि को कम करते हैं। सामान्य स्तर का सामाजिक अलगाव बच्चों को अच्छा करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे उनके अलगाव की मात्रा कम हो सके जबकि कम स्तर के अलगाव का कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ता है। उच्च स्तर का सामाजिक अलगाव भी बालिकाओं को अच्छा करने के लिए प्रेरित नहीं कर पाता है क्योंकि इससे उनमें अपने अभिभावकों के प्रति एक प्रकार का असंतोष उत्पन्न हो जाता है, जो उनकी उपलब्धि को ऋणात्मक रूप से प्रभावित करता है।

पुरस्कार का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव

पुरस्कार का हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक एवं हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक पर प्रभाव

तालिका 5

स्तर	*हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक*				*हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक*			
	मध्यमान M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'	*मध्यमान* M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'
कम N=41	342.18	63.12	कम-सामान्य	2.18	29.56	6.72	कम-सामान्य	3.52
सामान्य N=194	356.78	61.76	कम-अधिक	1.13	33.28	6.02	कम-अधिक	1.58
अधिक N=65	371.25	68.82	सामान्य-अधिक	1.09	31.44	5.44	सामान्य-अधिक	2.18

प्रदर्शित करने वाले परिणाम तालिका 6 में प्रदर्शित किया गए हैं। हालाँकि यह भी पाया गया है कि पुरस्कार की मात्रा एक निश्चित सीमा से ज़्यादा कर देने पर उपलब्धि पर उतना ज़्यादा प्रभाव नहीं पड़ता। स्पष्ट है कि बड़े पुरस्कार की तुलना में सामान्य पुरस्कार यथा शाब्दिक पुनर्वलक, अभिभावक की मुस्कुराहट या पीठ थपथपाना उपलब्धि को ज़्यादा सार्थक रूप से प्रभावित करता है। समाज में लड़कियों को लड़कों के मुकाबले कम महत्व देने की पुरानी प्रवृत्ति कहीं न कहीं आज भी प्रचलन में है और संभवत: इसी कारण से लड़कियाँ कम पुरस्कार में अच्छा करने को प्रेरित रहती हैं। संपन्न परिवारों में जहाँ लड़के लड़कियों के बीच भेद कम है तथा पुरस्कारों में भी असमानता नहीं है, वहाँ पर उपलब्धि को प्रभावित करने में पुरस्कार की भूमिका गौण हो जाती है।

सुविधाओं के वंचन का उपलब्धि पर प्रभाव

सुविधाओं के अभाव या वंचन का उपलब्धि पर प्रभाव संबंधी परिणाम तालिका 7 में प्रदर्शित

तालिका 6

स्तर	*हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक*				*हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक*			
	मध्यमान M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'	*मध्यमान* M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'
कम N=32	315.27	58.76	कम-सामान्य	3.69	38.61	6.18	कम-सामान्य	4.38
सामान्य N=224	360.8	66.12	कम-अधिक	5.03	34.12	6.72	कम-अधिक	6.09
अधिक N=44	388.71	65.52	सामान्य-अधिक	2.56	37.58	6.46	सामान्य-अधिक	3.14

तालिका 7

स्तर	हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक				हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक			
	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	तुलना समूह	't'	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	तुलना समूह	't'
कम N=54	308.8	58.22	कम-सामान्य	4.72	28.4	6.14	कम-सामान्य	4.09
सामान्य N=196	349.2	60.18	कम-अधिक	8.13	31.12	6.86	कम-अधिक	7.17
अधिक N=50	378.5	66.72	सामान्य-अधिक	5.77	37.8	6.16	सामान्य-अधिक	5.47

किया गया है। परिणाम से स्पष्ट है कि वंचन के विभिन्न स्तरों में अधिक वंचन वाली बालिकाओं के प्राप्तांक सामान्य तथा कम वंचन वाली बालिकाओं के प्राप्तांक से कम था। इससे यह स्पष्ट है कि वंचन उपलब्धि को ऋणात्मक रूप से प्रभावित करता है। बालिकाओं के व्यवहार को माता-पिता द्वारा उनके प्यार और लालन-पालन किये जाने के अधिकार से वंचित किया जाना उनके समस्त प्राप्तांक और हिंदी परीक्षण के प्राप्तांक को प्रभावित करता है।

पोषण का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव

पारिवारिक परिवेश में विभिन्न स्तरों के पोषण वाली छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव से संबंधित परिणाम तालिका 8 में प्रदर्शित किया गया है। परिणाम से स्पष्ट है कि विभिन्न स्तरों के पोषण का छात्राओं की उपलब्धि पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। शायद बालिकाओं के पालन पोषण में रूढ़िवादी परिवारों द्वारा बहुत ध्यान न दिये जाने के कारण उनका समायोजन कुछ इस प्रकार हो जाता है कि वे लालन पालन का

तालिका 8

स्तर	हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक				हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक			
	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	तुलना समूह	't'	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	तुलना समूह	't'
कम N=48	342.3	65.3	कम-सामान्य	1.63	30.67	5.81	कम-सामान्य	1.42
सामान्य N=185	353.4	60.1	कम-अधिक	2.21	32.16	6.66	कम-अधिक	2.34
अधिक N=67	369.6	65.6	सामान्य-अधिक	1.27	34.82	6.18	सामान्य-अधिक	1.46

स्तर बढ़ने-घटने की अभ्यस्त हो जाती हैं तथा लड़कियाँ इन बातों पर ध्यान देना कम कर देती हैं। शायद यही कारण है कि बालिकाओं की उपलब्धि इन बातों से अप्रभावित रहती है।

अस्वीकृति का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव

पारिवारिक परिवेश में अस्वीकृति, का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव प्रदर्शित करने वाले परिणामों को तालिका संख्या 9 में प्रदर्शित किया गया है। परिणाम से स्पष्ट है कि कम अस्वीकार्यता वाले बच्चों की उपलब्धि, हाई स्कूल परीक्षा के प्राप्तांक तथा हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक दोनों में, अधिक या सामान्य अस्वीकार्यता वाले बच्चों के मुकाबले ज़्यादा पायी गयी है। अस्वीकार्यता अर्थात् शर्तो के साथ प्यार, लड़कियों को एक व्यक्ति के रूप में कम अधिकार देना, अपनी भावनाओं को पूरी तरह से व्यक्त न करने देना तथा एक स्वतंत्र नागरिक के रूप में विकसित न होने देना बालिकाओं की उपलब्धि को प्रभावित करता है। आज के दौर में शिक्षा व्यवस्था में स्वतंत्र चिन्तन, तर्कशक्ति, अवलोकन तथा तत्काल निर्णय लेने जैसे कार्य करने पड़ते हैं, ऐसे में अस्वीकृति उनकी उपलब्धि को निश्चित रूप से प्रभावित करेगी। इसी प्रकार के परिणाम नियंत्रण एवं संरक्षण जैसे पारिवारिक परिवेश वाले परिवार की बालिकाओं के संदर्भ में भी प्राप्त हुए हैं। संभवतः यही कारण है कि अधिक अस्वीकार्यता वाली बालिकाओं ने अच्छी उपलब्धि नहीं प्रदर्शित की जबकि कम अस्वीकार्यता वाली बालिकाओं ने अच्छी उपलब्धि प्रदर्शित की।

वर्जनाहीनता का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव

पारिवारिक परिवेश में वर्जनाहीनता का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव प्रदर्शित करने वाला परिणाम तालिका 10 में दिया गया है। परिणाम से स्पष्ट है कि हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक तथा हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक पर वर्जना हीनता का कोई सार्थक प्रभाव नहीं दिखायी देता है। सिर्फ़ हिंदी परीक्षा में सामान्य वर्जनाहीनता वाली छात्राओं की उपलब्धि कम या अधिक वर्जनाहीनता वाली छात्राओं से ज़्यादा पायी गयी। इसी प्रकार का परिणाम पोषण के संदर्भ में भी प्राप्त हुआ है।

तालिका 9

स्तर	*हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक*				*हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक*			
	मध्यमान M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'	*मध्यमान* M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'
कम N=32	388.25	68.31	कम-सामान्य	2.63	36.14	5.45	कम-सामान्य	5.15
सामान्य N=210	355.12	66.12	कम-अधिक	3.34	30.10	6.28	कम-अधिक	7.91
अधिक N=58	342.78	60.27	सामान्य-अधिक	1.39	25.28	6.64	सामान्य-अधिक	5.11

तालिका 10

स्तर	हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक				हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक			
	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	तुलना समूह	't'	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	तुलना समूह	't'
कम N=42	345.12	61.2	कम-सामान्य	0.89	32.96	4.72	कम-सामान्य	0.61
सामान्य N=210	355.3	68.3	कम-अधिक	1.84	33.54	5.76	कम-अधिक	1.59
अधिक N=48	370.3	67.5	सामान्य-अधिक	1.37	31.28	5.22	सामान्य-अधिक	2.49

अभिभावक जागरूकता का उपलब्धि पर प्रभाव

इस अध्ययन का एक प्रमुख उद्देश्य अभिभावक जागरुकता का छात्राओं की उपलब्धि पर प्रभाव देखना था। अभिभावक जागरुकता की उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित परिणाम तालिका 11 में दिए गये हैं। परिणाम से स्पष्ट है कि अधिक जागरुक अभिभावकों की बालिकाओं की उपलब्धि सामान्य तथा कम जागरूक अभिभावकों की बालिकाओं की उपलब्धि के मुकाबले सार्थक रूप से ज़्यादा है। ज़ाहिर है कि अभिभावक **जागरुकता** उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण घटक है। उच्च जागरूकता वाले अभिभावकों के बच्चे ज़्यादा से ज़्यादा उपलब्धि हासिल करके अपने अभिभावकों से ज़्यादा से ज़्यादा अनुमोदन प्राप्त करना चाहते हैं। अभिभावकों और मित्रों के अनुमोदन का प्रमुख आधार छात्रों की उपलब्धि ही होती है। कम जागरूक अभिभावकों की बालिकाएँ अपने अभिभावकों और मित्रों के अनुमोदन पर बहुत ध्यान नहीं देती हैं और उनको अपनी

तालिका 11

स्तर	हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक				हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक			
	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	तुलना समूह	't'	मध्यमान M	मानक विचलन S.D.	तुलना समूह	't'
कम N=42	378.36	66.12	कम-सामान्य	3.178	28.52	5.27	कम-सामान्य	4.29
सामान्य N=210	345.2	64.2	कम-अधिक	4.8348	32.37	5.68	कम-अधिक	7.14
अधिक N=48	312.4	65.4	सामान्य-अधिक	3.1237	37.12	6.32	सामान्य-अधिक	4.98

उपलब्धि की बहुत चिन्ता नहीं होती है अत: उनकी उपलब्धि का स्तर खराब होता है। विभिन्न तुलना समूहों- कम-सामान्य, कम-अधिक एवं सामान्य-अधिक तीनों की उपलब्धियों में 0.01 स्तर पर सार्थक अंतर है। यह अंतर हाई स्कूल परीक्षा के प्राप्तांक तथा हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक दोनों के लिए सार्थक है।

उक्त परिणाम की पुष्टि अन्य अध्ययनों के निष्कर्षों द्वारा भी पुष्ट होती है। डिक्सन (1992) ने अपने अध्ययन में पाया है कि अभिभावक जागरुकता विद्यार्थी की तैयारी में सहायक होती है। किसी भी स्वरूप में अभिभावक द्वारा दिया गया सहयोग उपलब्धि में मापनीय वृद्धि प्रदर्शित करता है। वान्डरग्रिफ़्ट और ग्रीन (1992) ने भी पाया है कि विद्यालय और विद्यार्थी के साथ अभिभावक का सहयोग महत्वपूर्ण है और यह सभी के लिए महत्वपूर्ण परिणाम प्रदर्शित करता है। इन बातों की पुष्टि रामवर्गर (1995), स्विक एवं डफ़ (1978) तथा पाण्डेय (2006) के अध्ययन के परिणाम से भी होती है।

(iii) माताओं की शिक्षा का उपलब्धि पर प्रभाव

इस अध्ययन का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य यह देखना था कि क्या माताओं की शिक्षा का छात्राओं की उपलब्धि पर कोई प्रभाव पड़ता है? इससे संबंधित परिणाम तालिका 12 में दिए गए हैं। परिणामों को देखने से यह स्पष्ट है कि अशिक्षित माताओं की तुलना में शिक्षित माताओं की बालिकाएँ तथा शिक्षित माताओं की तुलना में उच्च शिक्षित माताओं की बालिकाओं ने हाईस्कूल परीक्षा तथा हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांकों में बेहतर उपलब्धि प्राप्त की। इससे स्पष्ट है कि किशोरी बालिकाओं की उपलब्धि को उनकी माताओं की शिक्षा प्रभावित करती है। यह परिणाम चौधरी (1975) के परिणाम द्वारा भी समर्थित है, जिसमें उन्होंने पाया है कि उच्च उपलब्धि वाले छात्राओं की माताएँ कम उपलब्धि वाले छात्राओं की माताओं के मुकाबले ज़्यादा शिक्षित थीं। यह पहले से ही स्वीकार किया जा चुका है कि अगर माता शिक्षित है, तो वह अपने पूरे परिवार को शिक्षित कर सकती है तथा

तालिका 12

स्तर	*हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक*				*हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक*			
	मध्यमान M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'	*मध्यमान* M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'
कम N=40	312.7	65.3	कम-सामान्य	3.27	28.52	5.27	कम-सामान्य	4.29
सामान्य N=136	350.7	64.3	कम-अधिक	4.67	32.37	5.68	कम-अधिक	7.14
अधिक N=124	368.4	35.7	सामान्य-अधिक	2.19	37.12	6.32	सामान्य-अधिक	4.98

खास-तौर से बालिकाओं को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा के महत्व से परिचित करा सकती है। शिक्षित माताएँ अपनी बालिकाओं का उत्साहवर्धन कर सकती हैं, उनको बेहतर उपलब्धि के लिए प्रेरित कर सकती हैं तथा उचित निर्देशन भी दे सकती हैं। संभवत: यही कारण है कि माताओं की शिक्षा का बालिकाओं की उपलब्धि पर बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

इस अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट है कि यदि बालिकाओं को अनुशासित करने के लिए लिए प्रेरित किया जाता हो, तो यह वातावरण छात्राओं की उपलब्धि में वृद्धि करने वाला होता है।

आजकल व्यवसाय के क्षेत्र में भी एक अलग प्रकार की प्रवृत्ति देखी जा रही है, जहाँ बालिकाएँ विज्ञान, तकनीकी, प्रबंध, संचार, व्यापार आदि क्षेत्रों में अपने को साबित करने का प्रयास कर रही हैं। बालिकाओं को इस प्रकार की नौकरियों के लिए तैयारी करने हेतु शुरू से ही उन्हें इस प्रकार का वातावरण दिए जाने की आवश्यकता है, जहाँ वे विज्ञान, गणित आदि विषयों में अच्छा

तालिका 12

स्तर	*हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांक*				*हिंदी उपलब्धि परीक्षण के प्राप्तांक*			
	मध्यमान M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'	*मध्यमान* M	*मानक विचलन* S.D.	*तुलना समूह*	't'
कम N=40	312.7	65.3	कम-सामान्य	3.27	28.52	5.27	कम-सामान्य	4.29
सामान्य N=136	350.7	64.3	कम-अधिक	4.67	32.37	5.68	कम-अधिक	7.14
अधिक N=124	368.4	35.7	सामान्य-अधिक	2.19	37.12	6.32	सामान्य-अधिक	4.98

थोड़ा नियंत्रित किया गया, उन्हें स्वतंत्र चिन्तन के लिए एक वातावरण प्रदान किया गया अथवा उन्हें सामान्य स्तर का पुरस्कार प्रदान किया गया तो छात्राओं की उपलब्धि सकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। यह परिणाम माता-पिता और अभिभावकों के लिए विशेषरूप से लाभकारी हो सकता है। यदि माता-पिता अपने बच्चों को परिवार में एक ऐसा अधिकारपूर्ण वातावरण प्रदान कर सकें जहाँ बालिकाओं के स्वतंत्र चिन्तन के प्रदर्शन कर सकें, जो अधिक तन्मयता, स्वतंत्र चिन्तन तथा पढ़ाई का एक अनुशासित कार्यक्रम खोजते हैं। इस अध्ययन के परिणाम, अभिभावकों को इस दिशा में एक मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं कि किस प्रकार वे अपने परिवेश विशेषकर पारिवारिक परिवेश को किशोरवय बालिकाओं की उपलब्धि में सहयोगी बना सकते हैं।

इस अध्ययन का एक अन्य महत्वपूर्ण परिणाम अभिभावक जागरुकता का छात्राओं की उपलब्धि

पर प्रभाव है। इस परिणाम की भी अभिभावकों और अध्यापकों दोनों के लिए उपादेयता है। जो अभिभावक अपने पाल्य की शिक्षा और प्रगति को लेकर जागरुक हैं उनके पाल्यों की उपलब्धि सार्थक रूप से सकारात्मक पाई गयी। अभिभावक स्वयं बच्चों से बात करके तथा उनके अध्यापकों से मिलकर बच्चों की उपलब्धि की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा इस आधार पर छात्रों की आवश्यक मदद भी कर सकते हैं। विद्यालयों में होने वाली अध्यापक-अभिभावक बैठकें इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, बशर्ते इन बैठकों का स्वरूप थोड़ा बदल दिया जाए। इन बैठकों में छात्रों की शिकायत करने के स्थान पर अध्यापक और अभिभावक दोनों मिलकर किस प्रकार से छात्र की बेहतरी हो और इसमें अध्यापक और अभिभावक की क्या भूमिका हो, इस पर मंथन करें तो ज़्यादा सकारात्मक परिणाम हासिल हो सकते हैं।

इस अध्ययन का एक अन्य महत्वपूर्ण परिणाम माताओं की शिक्षा का बालिकाओं की उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव है। शिक्षित और उच्च शिक्षित दोनों प्रकार की माताओं ने बालिकाओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। यह परिणाम उन कथनों की परोक्ष या अपरोक्ष रूप से पुष्टि करता है कि माताएँ यदि शिक्षित हैं, तो वे पूरे परिवार की शिक्षा में सहयोग करती हैं। यह सहयोग शान्त, तनावमुक्त, प्यार और भावनाओं से युक्त पारिवारिक वातावरण के निर्माण द्वारा होता है। यह सहयोग विशेष रूप से बालिकाओं के लिए लाभकारी होता है क्योंकि पढ़ी-लिखी माता बालक-बालिका में भेद नहीं करती हैं तथा खासतौर से बालिकाओं की समस्याओं पर ज़्यादा ध्यान दे पाती हैं। यह भी पाया गया कि अगर माताएँ अशिक्षित हैं, तो उनकी बालिकाएँ अध्ययन के दौरान अनेक कठिनाइयों का सामना करती हैं। अशिक्षित माताएँ बालिकाओं पर अनावश्यक नियंत्रण भी करती हैं, जिसका उपलब्धि पर ऋणात्मक प्रभाव पड़ता है।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि बालिकाओं की शिक्षा के लिए पारिवारिक परिवेश, माताओं की शिक्षा तथा अभिभावक जागरुकता एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है तथा उपलब्धि को प्रभावित करती है। यदि बालिकाओं को एक बेहतर परिवेश प्रदान किया जाएगा और माताएँ शिक्षित होंगी तो उपलब्धि बेहतर रहेगी। इस अध्ययन का परिणाम माता-पुत्री के संवेदनशील संबंध को भी स्पर्श करता है और दिखलाता है कि माता का थोड़ा-सा ध्यान, प्यार एवं अकादमिक मदद बालिका की शिक्षा को एक बेहतरी के रास्ते पर ले जा सकती है।

संदर्भ

गिलिगन, सी. 1982. *इन ए डिफ़रेन्ट वायस – साइकोलॉजिकल थ्योरी एंड विमेन'स् डेवेलपमेंट*, कैम्ब्रिज, एम.ए.-हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

____, लायन्स, एन. एंड हैमर, जे. (एडि.). 1990. *मेकिंग कनेक्शन्स् – द रिलेज़नल वर्ल्ड आफ़ एडोलेसेन्ट गर्ल्स एट एम्मा विलार्ड स्कूल*, कैम्ब्रिज, एम.ए. – हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

जेक्वस डेलोर्स एट. आल. 1996. *लर्निंग – द ट्रेज़र विदिन*, पेरिस, यूनेस्को

डिक्सन, ए. 1992. *पैरेंट्स – फुल पार्टनर्स इन द डिसीज़न मेकिंग प्रोसेस.* एन.ए.एस.एस.पी. बुलेटिन 76 (543), 15-18

पाण्डेय, के. 1982. रिलेशनशिप बिटविन होम एन्वायर्नमेंट एंड अचीवमेंट एमंग डिप्राइव्ड एंड नान डिप्राइव्ड प्री एडोलेसेन्ट, *जर्नल आफ़ द इन्स्टीट्यूट आफ़ एजुकेशनल रिसर्च*, 9(2) पेज 10-13

_______. 2002. *मदर्स केयर एंड गर्ल्स अचीवमेंट*, मिश्रा ट्रेडिंग कंपनी, वाराणसी।

मिश्रा. के.एस. 1982. *इफ़ेक्ट ऑफ़ चिल्ड्रेंस परसेप्शन ऑफ़ स्कूल एंड होम इनवायर्नमेंट ऑन देयर साइन्टिफ़िक क्रियेटिविटी*, पी-एच.डी. एजूकेशन, राजस्थान यूनिवर्सिटी

_______. 1986. *इफ़ेक्ट ऑफ़ होम एंड स्कूल एन्वायर्नमेंट ऑन साइन्टिफ़िक क्रियेटिविटी*, संज्ञानालय, कानपुर

वान्डर ग्रिफ़्ट, जे. (एंड ग्रीन, ए. 1992. रीथिन्किंग पैरेन्ट इनवॉल्वमेन्ट, एजूकेशनल लीडरशिप, 50(1), 57-59

स्टीनबर्ग, एल. (एल्मेन जे.डी. एंड माउन्ट्स, एन.एस. 1989. अथॉरिटेटिव पैरेन्टिंग, साइकोलॉजिकल मैच्यूरिटी एंड एकेडमिक सक्सेस एमांग एडोलेसेन्ट्स. *चाइल्ड डेवेलपमेन्ट*, 60, 1424-36.

ह्यूस्टन, ए.सी. 1983. सेक्स टाइपिंग, इन हैंडबुक ऑफ़ चाइल्ड साइकोलॉजी – सोशलाइज़ेशन, *पर्सनॅलिटी एवं सोशल डेवेलपमेन्ट*, (सं.) इ.एम. हेथेरिन्गटन, वाल्यूम 4, न्यूयार्क – वाइले, 388-467

_______. एंड अल्वारेज, एम.एम. 1990. द *सोशलाइज़ेशन कान्टेक्स्ट ऑफ़ जेंडर रोल डेवेलपमेंट इन अर्ली एडोलेसेन्स – ए ट्रान्जिसनल पीरियड*, न्यूवरी पार्क, सीए, सेज

हर्टाक्सू, एन. एंड उनेर, एच. 1994. फ़ैमिली बैकग्राउंड, सोशियोमेट्रिक पीयर नामिनेशन्स एंड परसीव्ड कन्ट्रोल एंड प्रेडिक्टर्स ऑफ़ एकेडमिक अचीवमेन्ट, जर्नल ऑफ़ जेनेटिक साइकोलॉजी, वाल्यूम 154, पृष्ठ 435-431